17.8.85 ॐ
पिताश्री

R-छोड़ भी दे आकाश .....ओमशांति । भक्त भगवान को अर्थात् बाप को बुलाते हैं। क्यों बुलाते हैं? क्योंकि दुःखी हैं। यह भी तुम समझतें हो दुःख के बाद सुख आना है जरूर। सुख था। अभी नहीं है। फिर बुलाते हैं कि हमको आकर सहज राजयोग सिखलाओ। सिखलाने वाला जरूर बाप चाहिए। बाप समझाते हैं जैसे तुम आत्माएं गर्भ में आय शरीर लेती हो। मुझे तो पतितों को पावन बनाना है। इसलिए मुझे बड़ा शरीर चाहिए। मुझे आना ही पावन बनाने। माया रावण ने तुमको पतित बनाया है। इसलिए अब यह 5 विकार दान में दे दो तो ग्रहण छूट जाए। पहला है मुख्य देहअभिमान। अपन को अब देहीअभिमानी समझो। मैं इस देह में रहने वाली आत्माओं से बात करता हूँ। इन्हों को ज्ञान देता हूँ। 5000 वर्ष पहले भी यह ज्ञान सुनाया था। पावन बनाया था। राजयोग सिखलाया था। कल्प2 सिखलाता हूँ। आने से ही हमारा पतितों को पावन बनाने का धन्धा ठहरा। बाप को पार्ट है आकर बच्चों का पावन बनाना। दैवी गुण धारण करने हैं। भविष्य में तुम सूर्यवंशी–चंद्रवंशी बनने वाले हो। यह नालेज है ही भविष्य दैवी प्रिंस–प्रिसेज बनने की ।तो दैवी गुण धारण करेंगे तो प्रिंस–प्रिंसेज बनेंगे। अपन को देखना है मैं धारण करता हूँ? क्या2 विध्न आते हैं। युक्ति से उन विघ्नों को उड़ाना है। बाप की याद से कर्मातीत अवस्था को पान है। कॉटा जो आए उनको हराते जाना है। देहअभिमान छोड़ देही अभिमानी बन बाप को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना रास्ता साफ होता जावेगा। गृहस्थ में रह कमल फूल समान पवित्र बनना है। विकार में ना जाना है। मूल बात है ही विकार की। विकार में जाना बंद करना है। भल कितने भी विघ्न आएं पवित्र जरूर बनना है। जास्ती विघ्न स्त्रियों पर आते हैं। वो चाहती हैं हम पवित्र रहें। कृष्णपुरी में जाने चाहती हैं। कृष्णजयन्ती पर बहुत प्रेम से कृष्ण को झुलाती हैं। पूजा करती हैं। व्रत आदि रखती हैं। वो तो है 7 दिन का व्रत नियम। बाप कहते हैं अभी तुम यह व्रत रखो कि हम कब विकार में नहीं जावेंगे। जब तक जीना है पवित्रता का व्रत रखना है। तुम जानते हो इस दुनियॉ में हमारा यह अंतिम जन्म है। ना सिर्फ हमारा सारी दुनियॉ का अंतिम जन्म है। हठयोगी सन्यासी कोई इस विचार से पवित्र नहीं बनते हैं। यह नहीं समझते कि यह अंतिम जन्म है। तुम तो समझते हो अब हम पवित्र बन और पवित्र दुनियॉ में जाना है। दूसरा जन्म हमारा पवित्र दुनिया में होना है। मेहनत है ना। साथ में रहते हुए परंतु विकार में ना जाना है। दोनों को व्रत रखना है। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। वो ही पुकरती हैं। पुरुष कब पुकारते नहीं हैं कि प्रभु लाज राखो। नंगन होने से बचाओ। यह माताओं की पुकार है। बाप को पुकारती है बाबा हमको नगन होने से बचाओ। यह वो ही गीता भागवत वाली बातें हैं सिर्फ नाम भूल से कृष्ण का लगा दिया है। कृष्ण तो पतित–पावन है नहीं। पतित–पावन बाप ही है। तुम समझती हो पवित्र बनने मार भी खानी है। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। सो फिर अब हो रहा है। एक द्रोपदी नहीं। तुम कितनी द्रोपदियॉ हो। अनेक पतितों को पावन बनना है। तुम माताएं निमित्त बनी हुई हो पवित्र बन और पवित्र बनानें। तुमको तो और ही जास्ती पढ़ाई पर ध्यान देना है। हमजिन्स को उठाना है। सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। यह है प्रवृत्ति मार्ग। गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र बनना है। पढ़ना और पढ़ाना है। जिससे पद उँच हो जाए। पढ़ाई है बहुत सहज। समझाना है भारत जो हीरे जैसा था। ल.ना. का राज्य था। अभी इतना गिरा क्यों है? हम आपको बेहद की हिस्ट्री–जाग्राफी बतावें। फिर स्वर्ग कैसे होगा?मनुष्यों को तो खयाल भी नहीं है। तुम जानते हो ल.ना. जो पूज्य थे वो ही फिर पुजारी बनते हैं। आपे ही पूज्य..... यह परमात्मा के लिए नहीं है। यह किसको पता नहीं है। ल.ना. ही पूज्य थे। अब पुजारी तमोप्रधान बने हैं। पूज्य थे। जरूर पुनर्जन्म लिया होगा। सतोप्रधान पूज्य थे। अब तमोप्रधान पुजारी हो गए हैं। वो ही ल.ना. 84 जन्म 2 पतित बनते हैं। यह किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है। वो तो समझते हैं ल.ना. भगवती–भगवान थे। अच्छा वो भी भगवती–भगवान सीता–राम भी

भगवती–भगवान , बाकी पुनर्जन्म लेने वाले कौन? यह किसकी बुद्धि में नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं उनको पुनर्जन्म लेना है। हम सूर्यवंशी फिर चंद्रवंशी बनें। अब ब्राह्मणवंशी हैं। फिर हम सो देवतावंशी बनेंगे। अभी परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा को एडाप्टेड कर ब्राह्मण बनाया है। कोई पूछे कैसे तुम बने? बोलो ब्रह्मा मुख से परमपिता परमात्मा ने हमको बनाया। बाप ही पतितों को पावन बनाते हैं। अभी हम प्रतिज्ञा करते हैं पवित्रता की। बाप को याद करने से ही हम पावन बनते हैं। बाप क्या कृपा करेंगे? कृपा तो की है ना। परमधाम से पतित दुनियॉ , पतित शरीर में आए हैं। बाप कहते हैं मैं आया हूँ। अब जो सिखलाते हैं सो तुम सीखो। मुझे याद करो तो तुमको ताकत मिलेगी। विकर्म विनाश होंगे। इसमें आशीर्वाद की तो बात ही नहीं। टीचर को कहेंगे क्या कि कृपा करो तो हम 100 मार्क्स में पास होवें। यह भी बेहद का टीचर है। पढ़ाते हैं। कोई को नालेज धारण ना होती है तो क्या करेंगे? टीचर सब पर कृपा करें तो सब पास हो जाएं। तो राजधानी कैसे बनेगी? तुम बच्चों को तो पुरुषार्थ करना है। फालो करो मॉ–बाप को।बाप को याद करो। और कोई उपाय नहीं। नहीं तो बाप को पुकरते क्यों हो? साधु–संत आदि सब कहते हैं हमको दुःखों आदि से छुड़ाओ। भारी संकट आने हैं। जब विनाश शुरू हो जावेगा फिर समझेंगे भगवान जरूर गुप्त वेश में है। कृष्ण अगर होता तो सारी दुनियॉ में ढिंढोरा पिट जाता। कृष्ण तो आ ना सके। यह तो बाप को आना पड़ता है। अंत तक बाप को ज्ञान सुनाना है। आते ही गुप्त वेश में हैं। कृष्ण हो ना सके। निराकार बाप सभी का एक ही है। वो आए ही हैं पतितों को पावन बनाने का वर्सा देनें। तुम्हारा यह फर्ज़ है सभी को बतलाना। पूछना है परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बंध है?बाप के कितने ढेर बच्चे हैं। तुम समझते हो परमपिता परमात्मा का डायरैक्शन है एक तो मुझे याद करो औ अच्छी रीत पढ़ो। बाप को अच्छी रीत याद कर औ वर्सा पाना है। बेहद की हिस्ट्री–जाग्राफी तुमको समझाते रहते हैं। चित्रों पर भी तुम समझा सकते हो। भारत सतयुग में सिरताज था। सूर्यवंशी देवी–देवताएं राज्य करते थे। फिर चंद्रवंशी राज्य हुआ। कला गिरती गई। यह भी सीखन पड़े ना। पढ़ेंगे तो अच्छी रीत तो सीखेंगे। पढ़ेंगे ही नहीं तो नापास हो जावेंगे। सावधानी कौन दे?आजकल माया असावधान करने वाली बहुत है। यहॉ झूठ छिप नहीं सकता। कोई भी विकर्म करेंगे तो जमा होता जावेगा। पाप अथवा पुण्य का जमा तो जरूर होता है। उस अनुसार ही दूसरा जन्म मिलता है। कोई भी पाप करेंगे तो फिर जन्म भी ऐसा मिलेगा। इसलिए बाप कहते हैं कोई भी पाप करते हो तो झट साकार को बतलाओ। ऐसा नहीं कि ईश्वर तो जानते हैं। साकार में बतलाना पड़े। इस जन्म में जो पाप कर्म किए हैं आत्मा जानती है। सब कुछ याद रहता है हमने क्या2 काम किए हैं। साकार को बतलाओ हमने क्या2 पाप किए हैं। मुख्य बात है विकार की। चोरी आदि करना झूठ बोलना वो तो छोटी2 बातें हैं। मुख्य है विकार की बात। काम महाशत्रु है। विकार में जाने वाले को ही पतित कहा जाता है। तो बाप कहते हैं इन विकारों पर पहले जीत पानी है। तुम्हारा दुश्मन यह रावण है जो पतित बनाते हैं। अब पावन बनने लिए बाप को याद करो। बाप को बन और फिर अगर विकार में गिरे तो चोट भी बहुत लगती है। पहले तो देह अभिमान छोड़ना है। फिर काम महाशत्रु। सारी युद्ध है इस पर। तो यह सारी बातें समझकर फिर समझानी हैं। बाबा पूछेंगे तुमने कितने को सच्ची गीता या सत्यनारायण की कथा कही वा अमरकथा सुनाई। पाप आत्मा तो ढेर की ढेर हैं ना। तो यह भी पोतामेल बताओ जिससे तुम ब्राह्मण बने हो। कितने को आप समान बनाया है। यह अमरकथा सुनाई है। नहीं तो कैसे समझेंगे तुम ब्राह्मण बने हो। यह है सहज राजयोग की बातें। बाप का परिचय देना है। दुनियॉ में यह तो कोई जानते नहीं हैं। बाप के पास बहुतों के सर्टीफिकेट भी आते हैं। लिखते हैं फलानी ने हमको ऐसा समझाया। वो ही गुरू निमित्त बना स्वर्ग का मालिक बनानें। B.K. सबूत देती हैं ; परंतु जो बनती है वो किस

को समझाती है? किसको ले आती है? ले तो आना है ना। जिनको निश्चय होगा फट से कहेंगे पहले बाप की गोद तो ले लेवें। कृश्चियन में बच्चा पैदा होता है तो कृश्चियनाइज़ कराते हैं। हम भी ईश्वर बाप की गोद ले बच्चा तो बनें। सतगुरू की गोद तो लें। गोद ली , बाप से मिली तो भी वर्सा हमारा हो गया। गोद तो जरूर लेनी पड़े। ऐसे मस्त कोई मुश्किल निकलते हैं। समझाना तो है ना। आगे चलकर अच्छी रीत समझेंगे। तुम्हारे में भी ताकत बढ़ेगी। फिर बाप से मिलने बिगर रह ना सकेंगी। एकदम भागेंगी। यह तो मॉ–बाप भी है , टीचर भी है, गुरू भी है। मॉ–बाप की गोद तो ले लेवें। गुरू के पास जाते हैं तो वो कोई स्वर्ग की बादशाही तो देते नहीं। बादशाही बाप से ही मिलनी है। बाप ही टीचर , गुरू भी है तो क्यों नहीं तीनों वर्सा लेवें। यह वंडर है ना। कृष्ण के लिए थोड़े ही कहेंगे वो बाप , टीचर गुरू था। कहॉ भी ऐसा लिखा हुआ नहीं है। कृष्ण तो छोटा प्रिंस था। यहॉ तुम बच्चों की बुद्धि में है। यह बाप भी है , शिक्षक भी है, गुरू भी है। इनका कोई बाप ,शिक्षक गुरू नहीं। कृष्ण के तो मॉ–बाप थे ना। पतित–पावन है ही एक बाप। जिसको मॉ–बाप हैं वह पतित–पावन हो ना सके। उनको भगवान नहीं कह सकते। भगवान का कोई बाप नहीं। गॉडफादर का काई फादर हो नहीं सकता। गॉडफादर को पतित–पावन लिबरेटर कहा जाता है। उनको लिबरेट करने वाला कोई है नहीं। यह बाप का ही काम है। मनुष्य को भगवान कह नहीं सकते। ब्रह्मा ,विष्णु , शंकर को भी रचने वाला वो बाप रचयिता है। ऊँच ते ऊँच भगवान गाया जाता है। वो हम सबका बाप है। कृष्ण को सभी का बाप थोड़े ही कहेंगे। हम एक निराकार बाप के सब बच्चे हैं। वो ही नई दुनियॉ का रचयिता है। नई दुनियॉ को सुखधाम कहा जाता है। फिर नई से पुरानी दुनियॉ बनती है। रावण राज्य है ना। रावण को जलाते भी हैं ; परंतु समझते कुछ भी नहीं हैं। त्योहार जो होते हैं उनका अर्थ भी नहीं समझते हैं। रावण को क्यों जलाते हैं , कब तक जलावेंगे कुछ समझते नहीं। बाप समझाते हैं तुम्हारा यह बहुत जन्मों के अंत का जन्म है। रावण का भी अभी अंत है। फिर सतयुग में थोड़े ही बनावेंगे। यह दुश्मन किस प्रकार का है जिसको जलाते ही आते हैं। इसका जन्म कब हुआ किसको पता नहीं। शिव जयंती मनाते हैं तो रावण जयंती भी मनावेंगे ना।समझते कुछ भी नहीं हैं। तुमको समझाया जाता है। यह है डिटेल बातें। यह भी बुद्धि में धारण करनी पड़े। क्लास में ही ना आवेंगे तो क्या पढ़ेंगे। ना पढ़ेंगे , ना पढ़ावेंगे तो क्या पद पावेंगे। बच्चा वो जो अच्छी तरह पढ़कर और पढ़ावे। सबूत दे। बच्चे तो सभी हैं। समझना चाहिए हम अच्छी तरह सर्विस करेंगे , बहुतों को आप समान बनावेंगे तो बाबा का अच्छा प्यार रहेगा। समझते तो हैं ना। बाप तो पुचकार देते रहते हैं। बच्चे अच्छी रीत पढ़ो। अमरनाथ पर दिखलाते हैं पार्वती को कथा सुनाते थे। वहॉ कबूतर को रख दिया है। अब कबूतर क्या पढ़ेगा?तोते के बदली कबूतर रख दिया है।कितनी मूर्खता है। पिजन तो कब पढ़ता नहीं। तोता पढ़ता है। तोते को भी सिखलाया जाता है। तोते में भी दो प्रकार के होते हैं। यहॉ भी ऐसे हैं। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे वेा कंठी में पिरोएंगे। पढ़ते ही नहीं हैं तो जैसे भगती है। वो विजयमाला में आ ना सके। तुम बच्चों को तो अच्छी रीत पढ़ना है और पढ़ाना है। यह सच्ची कथा जो सच्चा बाबा ही सुनाते हैं सच खंड की स्थापना करने। ल.ना. के राज्य में कब झूठ बोलते नहीं। वहॉ माया ही नहीं।झूठी माया , झूठी काया..... .....कहा जाता है ना। रावणराज्य शुरू होता है तो तब से हर बात में झूठ ही झूठ हो जाते हैं। शास्त्रों में कितने झूठ लिख दिए हैं। व्यास मनुष्य जिसको भगवान कहते हैं। वो कितने झूठ बना सकते हैं तो इस समय के मनुष्य कितनी झूठी बातें बताते होंगे। गीता भागवत में ही झूठी बातें लिख कितना भारत को नुकसान पहुॅचाया है। वेद–शास्त्र, रामायण आदि कितने छपते हैं। कितनी कमाई होती है। सब झूठ। झूठी माया, झूठी काया ,झूठा सब संसार।

परंतु कोई समझते थाड़े ही हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। कोई को भी बैठकर समझाना तो बड़ा सहज है। ल.ना. का राज्य बरोबर था। फिर वो कैसे पुराना हो गया है?देवी–देवताएं कहॉ गए?नर्क कैसे बना? आओ तो हम आपको सारी कथा सुनाएं। अगर खुद ही सुनते नहीं हैं तो औरों को सुनावेंगे कैसे?प्रश्न का उत्तर किसको ना देंगे तो और ही निंदा करावेंगे। मनुष्य कहेंगे यह तो झूठ बोलते हैं कि हमको भगवान पढ़ाते हैं। अगर भगवान पढ़ाते हैं तो हमको प्रश्न का रेस्पांड क्यों नहीं समझा सकते?तो ग्लानी कर दी ना। फिर वो उॅच पद कैसे पावेंगे?पूरा पढ़ते नहीं हैं। बाप , टीचर , गुरू तीनों का निंदक बन जाते हैं। तीनों की निंदा करा देते हैं। बिचारे कुछ भी जानते ही नहीं। सतगुरू तो एक परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है। सिक्ख लोग भी कहते हैं सतश्रीअकाल। उनको ही पतित–पावन सतगुरू कहा जाता है। उनकी महिमा करते हैं। फिर भी अपन को गुरू कहलाय सबको गिराते रहते हैं। बाप कहते हैं महिमा तो हमारी गाते हैं ना। इसलिए गाया जाता है सतगूरू बिगर घोर अंधियारा। वो ही आकर पतितों को पावन बनाते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। गायन भी करते हैं। याद भी करते हैं। वर्सा हमको किससे लेना है यह भी नहीं जानते। अभी तुम बच्चे जानते हो हमारा बाप , टीचर , गुरू वो एक ही है। फिर तुम भी माता , टीचर , गुरू बनती हो। निमित्त बनती हो ना। महिमा तो एक की हुई ना। तो तुम बच्चों को यही धंधा करना चाहिए किसको रास्ता बतावें। मेल–फिमेल दोनों को यह धंधा करना है। माताओं को और तो कोई धंधा है नहीं। घर में सेंटर खोलने से आस–पास वाले सब आ जावेंगे। दिन में सबको फुर्सत रहती है। लिख दे बेहद के बाप से आकर वर्सा लो। यह भी लिख सकते हो आओ तो हम आपको ल.ना. के 84 जन्मों की कहानी बतावें। मनुष्य वंडर तो खावेंगे ना। कुछ न कुछ लिखकर धंधा करते रहो। स्वर्ग में ल.ना. राज्य करते थे। फिर वह कहॉ गए कोई भी नहीं जानते। अब बाप ने बतलाया है 84 जन्म तुम ले कहॉ जाकर जंगल में पड़ते हो। तुम ब्राह्मणों को यह कथा सुनानी है।भारतवासी जो सूर्यवंशी थे अब पतित बनें हैं फिर पावन बनाते हैं। 63 जन्म काम चिक्षा पर बैठ काले अथवा श्याम बन गए हैं। अब फिर सुंदर बनते। बाप शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। फिर ब्राह्मण से देवता बनेंगे। तो ऐसे2 लिखना चाहिए आओ हम तुमको ल.ना. जो स्वर्ग के मालिक थे उनकी 84 जन्मों की कहानी बतावें। 84 जन्मों बाद फिर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। पहले नम्बर की सुनाने से सबका आ जाता है। सर्विस में लगा रहना चाहिए। बाबा को चाहिए बादल जो वर्षा करे। नहीं तो पद कैसे पावेंगे। यहॉ भी देखो राजाएं कितने हैं। कितनी लाखों प्रजा है। उनमें साहुकार भी हैं , गरीब भी हैं। फिर भी राजा , राजा है। बाप कहते हैं तुमको नर से नारायण बनाने राजयोग सिखलाता हूॅ। यह समझने की बात है। इसमें गफलत छोड़ देनी है। मौत तो अचानक आ जाता है। मौत का भी तूफान है। माया का भी तूफान है। ज्ञान–योग से पार होना है। भल गृहस्थ व्यवहारा में रहो। शरीर निर्वाह करो और पढ़ते–पढ़ाते रहो। गरीबों के लिए तो बहुत सहज है। यह बोर्ड लगा दो। कोई ना कोई निकलेंगे। प्रदर्शनी इतनी हुई है कहॉ2 एक–दो निकले हैं। कहॉ से तो एक भी नहीं निकला। आगे चल प्रदर्शनी से बहुत निकलेंगे। सेमीनार से करेंगे , सर्विसेबुल बच्चों को रिफ्रेश करेंगे। फिर उन्हों को प्रदर्शनी सर्विस लिए ही मुकर्रर करेंगे। इसके लिए तो बहुत चाहिए। प्रदर्शनी के सब चित्र यहॉ मॅगाय फिर सेमीनार करेंगे। निकलेंगे भी सौभाग्यशाली जो सेमीनार में सीखकर फिर इस धंधे में लग जावेंगे। कन्याओं की कमाई मॉ–बाप तो खाते नहीं। फिर उनको ईश्वरीय सर्विस में लगा देंगे। कोई गरीब है कन्याओं की कमाई पर ही चलते हैं। फिर उनका भी प्रबंध किया जा सकता है। फिर बच्चियॉ इस ईश्वरीय सर्विस में ही लग जावेंगी। अच्छा , मातपिता का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग।